

मोत्या मूंघो औसर (न्हाणो सब्रे)



मोत्यां मूंघो औसर

सुरेन्द्र अंचल

स्वस्ति साहित्य सदन

© मुरेग्द्र अचल

प्रकाशक :

स्वस्ति साहित्य सदन रानी बाजार, बीकानेर-334001

आवरण हरित्रकाश त्यामी

सरकरण . पैलो, अब्दूबर 1985

मोल बारह रिपिया मात्र

महक्त .

एस॰ एन॰ प्रिटर्स नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

9

14

18

23

28

33

37

41

45

50

ोत्य।	मुघो	औसर		

हौमलो जीत्या करै

जुद्ध रो गिरज

राज मादरा

युत्त मरियो हित देस रै

मूछाळै सिंध री बात विगत-अंकल अचपळिये टावर री

राजमूगट

मामै री खिडकी अर का

बुखार भात भात रा

विगत



मोत्यां मूंघो औसर



मोत्यां मुघो औसर

दूध रा सामा मू घोषोडो चादणी ऊनळवाओ । चादडना री जोन में जगर नगर करती हुयी 'पीछोळा' री लचपळी फें'फ हिवर्ट रा तार सिण-भारे । पण, आज ओ चाद म्हारा में ता मू होगी वयू ? चादणी री घोळो घण चादर म्हारा हिवर्ड री नाळी सुचरण री भावनावा ने लजकारती

हुपी लागै । क्य ?

त्री हुवेर री चण्डार, अं हीरा-मोती, मेवाड री माटी से पसीना स् सीचंर निजवासी हुवी धान, सैंग स्हार्र सन री तुवारव री नागण नै जार्ये चूक रेवा। स्हारी जनस-सीम सन्ते धिवसर री। आज स्वारी सन बीपरी जीपरी नगर वार्ष्य स्वारा रस संस्ता स्वार

बान न्हारी मन बीपरी जीपरी मूग 'जाणे म्हारा रात मे'ला मे लाय लगा र धुचे रा बतुंडिया चठ रीग है। हिये रा कपाट खीलर आ हिमलरार म्हार्र रोन रोम में भाड़े री कणी ज्यू चुने ' यगे हेत सू कमायोडों धन, म्हारा सू मुखे सबसीडतों हुनों मेम सारी 'नम् ' पण फ्यु '

अं विद्यमी ! ब्हारी इती किया इण भागासा में है तो बच्च इण तर्र मू समळी मोहरा, नगळी धन, स्हार्च नाळचे म ववळिया री मुळा वण'र चुभै ? 'क्यू 'क्यू ?

े 'क्यू ? क्यू ? ओ कूण ?

भाकुण भाव हाथा म तीर-कवाण । इण री आत्या सूखाही कराळी लेवें जाणें —रातीचढ़ी

मन्तै इतरी पुर-पूर्र काई देखें देण री आख्यों में इत्ती धिरणा म्हारा मूबयू क्यू पण बयू रे

सिस्पा रा, बो अलगोजी बजावती-रामूडी ग्वाळिमी, मन्ते देख'र

चाणचन नयू यम गियो ?

सार्ग जाणे प्यारुमेर पमस्यि। हुवी औ मरनाटो अपचा सैन हू हाया मू गानी शसाड रैया हुवे। मैं सुद अपने आप सू दलो उरण वयू साम्या हू।

श्रोह, अवित्य नाथ ' सद-पाट रा धणी ' मू बुधेर, येजारे री छणी। हीरा-पाना, धम-प्राल मू चनाच्छ बोर्ड ये पुत्रनारना हुवा बाडियर-नाथ गिरमो स अर महारी जनमञ्जोन मवाड पूर्व सू बुट्टार्य शुकार पान री राहिषा अरोगे पण वे भी बन-बिलावडा ने भारी। माटी री क्याडी जैनिन रो बीबाण राणा प्रतारसिंध, अर वी रै मासा री अणी उदास क्ये?

आशाय है प्रे धाटियां में सिंघा वी वहां है वी है शिवाद्धिया री हुबती हुदबाद व्यवस्था व्यवस्था विकास

ओ कुण ?

सन्दियो दोली ? अरे, इण रै हाया में झेर री जाग्या छडग ? आज

अपयोज्यो, नजीव सू वर्षार निमर गियो ? यू लागे जाणे वरोई व्हारा वाला से छानी-मीच वेचै वर्षमाया । तू मादी राचोर ! त वारी सम्मी-जानण न वेच पावै दसी वेईमान, मजी,

मपोळियो । मेबाड री इज्जन नै इस रैयो ।

भोह | भवाड री मादी | गानी छिना चरदे | न्हारे हिवडै म बाडो नागन, मुदारच रो मदी | गानी छिना चरदे | न्हारे हिवडै म बाडो री लाज दुनमणा रे हाम सिन रेसी अर न्हू इल दाजाने वे गुळांची मार र

भाभा सा ¹ जाग ¹ नीदझ्ती निवार।ओ छन,ओ जीवण,ओ जोवन, यारो नो है नी। जागण रो हेली सुण। मैं माटी रा जाया भाटी में मिल जामी।ओ समार चौसर रो कात्री, साझ पट्या उठ जासी। धन-धाम अर

चाम न रहसी, करवा काम रह जासी।

भ मार्गा । मरणो जनस है तो जनमभीम री खातर मरस्या । भी रोधन भी रै मेंट करस्या । मिलाय रे तहस्य तीत्रम सर्वेह हुव- मियाता रा सेव भी टळी । जार महारे हिल्हें रा जबर-निवाड परसरट कर्रट खुल स्थि। इया निगगर में तो में लाग लागे, जिला से जनमभीम री बरवारी रो रुवो युटीज रैयो है । डण जीवण नै धिनकार है । फिट है । यूऽऽऽ ¹ मामासा तन्नै युऽऽऽ ¹

भी मीरता मुद्यो औसर 1 उठ ! मेनाड री लाज बचावण मे चूकै मती ना ! महाराजा प्रतापित्व रो रिण चूनावण री समैं है । भ्रामा, गुण सर्क ती मुण ! मेनाड री माटी रो कथ-कण की है—"भायड एहटा पूत जण जेहरा राजा प्रताप !"

उठ । आ ताराळी रात सन्नै गैल बतासी । वो चादङसो सागै-सागै

रखाळा सरती पौचासी । उठ ! भामा उठ !

भामों सेठ पोछोळा री पाळ सू स्वेसी कानी दुरियो। आभै तारा मुळकण लाया। हालो सगळा हालो। हिमे रो मेल धो'र गदली काया मै पत्रनाणी हुनै तो जो जौसर ¹हा, जो औसर—मोखा मूची ¹

धर मजला-धरक्या।

पूराकूर गाडिया, ऊँग अर घोडा पै श्रुहरा री थैलिया। वटाऊ मामी चाल्यो।

'ओ कुण ? समळियो भील ? क्यू ? अबै इण कुटैस राक्यू ?''

' भी खजानो सिध सेटा ? '

'गगाजी म पवितर होवण नै । महाराणा रै बरणा मे माटी रो मोल चुकावण मै।''

"धिन धिन है भामासा । इण मीदे नाम नी आवेला सो ओ धन, नद

भाम जासी ? स्टू भी थारी चाकरी म सामै ।" माटी सौदी सौंदी महक सू सुवागत करें । आडावळ री घाटिया गैन

वतावै। धर मजना—धर क्वरो वटाऊ भागी चास्यो जावै। "भा कुण ? सर्वारियो डोली ? अवै, इण टैम रा ? अर इसी कडावण।"

'आ बाह्य सिंहा सेहा ?"

"नुवै सूरज री उपाळी सारू। दाता रै सवा मण रै माले री चिलक में चार चाद समावण नै।"

"रग है भामासा। म्हू विडद बाचतो सागै चालू।"

धर गजला-धर बूचा।

' आ कुण ग्यारसियों सादू ? पर्न सान् ?"

"आ कुच सिध जिजमान ?"

"सीव पे सियाळचा घणा हुनावै रै ग्यारसिया भाई ! सिघा री दकाळ जगावण सारू ।"

"अुग-जुग जीवो सेठा ¹ म्हू जातरा रा मुसस मतर बाचू। थारो हिवडो देस री सतन्तरता रै इमरत म गलगच्च रैवै। यह मैबाड मे तारा रै ज्य चिलकैला। थारी मिनख-जमारी सुघर गियो भामा। रग है।"

बिघाता रहे जद आछा दिन पाछा बावडै ।

पावण्डा, पावण्डा मारग कटै। आडावळ री घाटिया, झरतोडा क्षरणा, चढ़ाव उतार, बळदा दै गळै, टकोरा री टणकारा, गाडिया री वड व । बद्यती जावै।

घर मजला—धर कथा।

चादणी थिरक थिरक नार्थ । नखडै रै पत्ता सु श्राक-शाक'र जावती बाळद नै निरखै । माटी सू आख मिनाणी रमै अर भागासा रै मारग री जोत बढ़ा'र मुळकै, पुळकै, विलकै।

मजला पूच्या, बाळद यमगी । बळवा अर टोरडा री टणकारा स दाता सावचेत हया । आडावळ जाग्यो ।

"भामासा रो मुजरो । दाता नै चाकरी निश्ररावळ ।"

"सेठा ? इण क्टैम रा ? इण काकड में ! इण घणघोर रोही में ? अर

इसी गाडिया, इतना टोरहा, घोडा ?" 'अन्नदाता । अनिसिय रा दीवाण । हिन्दुवाणी सूरज । स्टारै हिबडै

री फुफकारती सुवारच री नागण आज मरगी। पापा री छिमा मागण. अर जलमभीम रा रिण चुनावण नै हाजिर हुवो हु। सगळो धन धाम, हीरा मोती, गेह, मनकी, माटी रै अरपण । बाता रै चरणा में निखराबळ । झझारा नै रोटी दो, दानगी चनावो ! भाळो साभौ ! मुछा ताण'र हनारो जिण स अक्बर सूतो औजकै, जाण सिराणै सांप।"

रंग है मामासा । मेवाड रा सपूत । मावन रो घुण अधारो म्हारी आस्या र सामे घुमड रैयो हो। म्हारा मारग मे अधावा रो अणतो ईज नाळो भावर आय कम गियो । पण वै म्हारी सै बवटाया रो जवाब ले'र आया हो । विधाता तुठा तो बाछा दिन पाछा बावड गिया है ।

क्षो धन भेवाड री गरतोडी मुतन्तरता रै सार सरजीवण-बूटी सिरसो काम सारमी । तू सावत दानवीर वर्ण है।

अबै आसावारी विरणां चिलको है तो नुबै सूरज री उगाळी भी होसी।

ोसां! "सगळिया! जेज विण री! पेट री शाय युझावण सारू भटनता

हुया बारा भोल सरदारा नै भेळा कर ।" 'सक्रिका ! भटक्वा झुझारा नै नभारै रै डनै सू शुला ! जलमभोम रो असर सुत भागासा, नुबै सूरज री किरणा बाट रैयो है ।"

धीऽ-श्व, बन्डऽऽधीऽऽ । नगारा घरणाया ।

आडावळ रे पार्ट सिच दहुकै। चावणी रात गवनामण-सी मदमाती, अळसाती आयूर्ण गास्या उतरे । वह रे रुख पे बैठपोडा कूरडा — कुकडूड कूड पता हुया मुखा सूरज री उपाळी रा समबार, आगे सू आगे पीचावण साराय-—

कुन चूळ नूळ! जुन बूळ नूळ । ग्यारसियो साहू सूरजजी नै जळ चढावतो हुयरे मत्र बार्च--

> जो दृढ राखे धर्म की, विहि राखे करतार 1

हौसलो जीत्या करें

जुद्ध सू चिरणा नरणाळा नै भी नदी-नदाम जुद्ध केंद्र फरत रै रूप में नरणो पर्छ। महाभारत रै जुद्ध में पाण्डब नी चावता हुया भी न्याव रै सार विकास

लिक्या । फूल्योडी सिक्या सुचेतगढ री छावणी पै झावै । जम्मू-स्याळकोट रै

राजमारग पैका छावणी मुख री सास लेवे। अंव-ओव टाठको जवान, हिबई मे देस री खातर परण रो वोड अण्तो, झूलण रो उमाव अण्तो । साच नै मान करें, जेडे झूठ नै मजहत रेरन सुरग'र पडोसी भाडे

पानिस्तान पानाकर, अब मुख्य पानवह देश तूर्य राजानी विश्व पानिस्तान रा सत्ताकारी जुद्ध रा ताबडा तोई। उपानी पैटनईसा विद सेवरजेट, स्टार-काइटर्स अह मिनी नापाय बना, जेडा अस्पर-सस्तरा पै पणी गुमैंज। पण, हथियार नी जीत्या वर्ष, होसलो जीते।

श्रेक छोटी छोटी मूछाळो रिवोड मोहस्वार वयर्ष घर बागद सिखतो हुयो होत्रे । मुक्तगढ री श्रा हावणी निसक बूबते मुख्य री सीलो छागा में क्लिकाढा करें। से बागद स हारोख निव्हों —बाह सितस्वर उत्तीन सी पैस्ट। आमें सिख्य री गतायम को पढ़े मी। दिवा में सिख्य री गती उद्देश कही मर्का में सिख्य री गती उद्देश कही मर्का में साम में बाळमीटिया स्वारत में, मोबिमा में, मनीरिया ने। पण निरम् कार्ड है में में होई बेडी सिख्य लोग बराज तो मारिया है

नी। राजस्यान रो म्हारो तातो लोई नाडिया म हिबोळा खाबै, ऊनळै, पण तण रो रन दिखानक रो औसर तो आयो ई नी ? हे चामुण्डा माई। हे अजमेरवाळै काजा। जेड़ो बौसर कर बासी ?

सूरज री नेसरिया-निरणां बी रै हौसले मैं निमस्पार करती हुई आयुण डूवी ! अने कामळो नीम री डाळी वै आय बैठघो, अर काद-नाव रि । बो काकरी उठा र उण पै फैनी । इत्ता मे खटाखट करतो हयो अेक बवान उण रै सामै आ'र ऊमो हुयो अर बोल्यो, "सलाम अयूव भाई।"

"मालेक्म सलाम । कीकर आवणो ह्यो ^२ अबै ^२ ईँ टैम रा ?" 'आपने कमाडिय-अफसर मा'व बाद फुरमावै ि अवै । ई ज घडी ।

पधारो ।"

कागद उठ ई मेल्यो, वी पै भाट रो बोझ घर'र व्हीर हुई गियो । द्यायरलेस पै बैठघोडो अफसर माथी उठा'र थोडी जेज उण री उणि-मारो देख'र वोल्पो---"रिसालदारअयूद[ा] टेम आपूगी। सम्प्रतणै रो शीसर भी अबै को है नी। समाचार हैं क, पाक रा पैटनटैका यो दळ आपा

रै नजीक आ प्रमो है।"

आरपा में अण्ती बिळक पळकी ! भूजावा फडकी ! मनचीरयो हुयो । 'सा' य । अल्ला-ताला जेज सू युणी, पच सुणी जरूर। हुकम हुवै तो पैटनटैका सूटकरा'र देखू। जलमेमोम पै मर मिटणै रो औ मुमामोलो थीसर आयो।"

''अयूव[!] यारै पै मन्नै पूरो विस्वास है। अबै आप री मूझयूझ मू,

टालवा जवान लेर देस रै नमक रो करब जनारो।"

'फौजी सैंग टाळवा ई ज हुवै। हुबुम दी जेज है t"

"क्च परी । यारी मदत, आभै सुनेट अर हटर जहाज वरैता। पाछ स् पैदल सेना भी पून जासी।"

"पैटनटैका रो विणास कर दूला, जूना खेडा उथाड दूला।"

देस पै मर मिटणे रा नोडीका मुखाका री ट्कडी दूसमणा रै समन्दर रो बिलो-बणो बरण नै छक्के बधी ।

आमै-सामै होवण म जेज को लागी नी । दुसमण रा पैटनटैका सू गोळा री बिरवा होवण लागी। गोळा छई, जमी फाड'र घसै, ध्वा अर घुड रा बादळ उठै ।

हवलदार अब्दूल हमीद जवावी योळा दागण नै चतावळो हपो पण अपूत्र बरज'र कैयो, "जीस म होस नी खोवणो । छानामाना बचता हुया बढता रैवण में ई ज सार है। नजीक पाँचर चीत रै ज्यू नटाट्ट हमलो करस्या । यु अन भी गोळो खाली नी जावैला । मरणो तो है ही, पण, अञ्ज हुम्पारी सू लडणो चावै !' साथी जमाल आभे पै देख'र बोल्यो, "जनाव अयुव सा'व । इसमणा

रा उट अर स्टार-पाइटम चीला रे ज्यू झपाटा मारण साम्या है।"
"सामें देख"र आगे बछो। उपां में तो आपा पां हटर अर नेट निपटना

रैई। हो, थोडा जीवणे हाव बानी गुड र बधो। नवीता रेवी। दुरामण आपा राधीरज नै देश र विक्ष निवा है। चन्न-बन्न होय र गोटा स्ट्रा

रैया है। अंक भी निमाणों सही नहीं हैं। अर्थ जीत आगा पी हैं !' हाँ' अर्थ ठीव जाग्या आवगी—पायर।" अर पेली बार ओडो सधियोडों हुयों वे पँटनटेव धवव नू आग पवट

जरपता बार जहा नावजा है हुना परन्य प्रमाण पर सोबी। अजेज दूजो गोळो अब्दुल हमीद रो उडियो अर दूजे पैटन रा पुरना-पुरणा गिण निया।

'सादास । जमान, उटी नै भी । बहतरवद-गाडी मूसीधो नी टम-रावणी !"

'टबरावण दो सांव । मन्ने जादा संपर नी रैसने (बस्तरवनाधि सूं आपा रा जवान हिचन रैया है। 'या परवर दिवार…''—अर बस्तरयद गाडी रैकानी सोय गियो । यादी उन री छाती रैपडगी। वण,

अंग भमनी उठ'र घुवे रेशुटबार रेरेसाँगै घडाम-धडाम-- गावी री निर्चा, दो-दो, तीन-सीन पत्तान पै जाम बिजरी। "रत है जमाल! नर नियो कमारा '। हा अबै डावें हाय सृबधी!

"रग है जमाल ' नर नियो कमात '। हा अबै बावे हाय सुध्यो । जबाना, भरत तो सिंघ रा दात गिणतो, आपा पैटनटैना रा पुरजा गिण-स्या ' के तो कागज री नावा है।"

'हिंग्दुस्तान ।" ''जिन्दाबाद !"

16 मोत्या मधी बीसर

"जिन्दाबाद !" अर, रहे, अक पैटनटैक से ड्राइवर तो टैक छोड 'र भाग छूटो । पडै, उठै अर फेर भागे । यो नै भारत से गतामुग को पड़ैनी !

मैदान सफाचट्ट । आर्थ में उडता हुया जेटा अर नेटा रा भरणाटा भी

मुणीजै मी।

इण अगचीनी, अणूठी जीत रे सब सू रिसालदार अयूव अपणे साथीडा नै भर निजर देखें । सराठा री आएया से चमक ।

उम्मान कैवण लाग्यो, "सा'व! इण पैटनटैन पै असवार हो'र नमार्जिय सा द ने सिलाम कराला । म्हे स्टार्ट करणो आण् ह । हुकूम हुवै ।"

अर उण अजुवै लोहै रै दैत्य, पैटन पै असवार मदछिनया जोधावा री

टोळी, जीत रा नारा लगावती हुई ब्हीर हुई । भारत भर रा साठ विरोड नागरिका रै कच्छा सु गुज्यो-भारतीय अयव । जिन्दाबाद ।

कमाहिए आफिसर अयुत्र नै छाती सु चेप लियो । 'धन्य है अयुव ! अणुता अणुता अस्तर-सस्तर तो दूजा देन उधार दे सबै, पण थारै जेडो हौत तो मुण देवें । फोजा नी जीत्या करें हौसलो जीतें । 'ओ ले, थारी अधूरी निष्यादी नागद । "अबै पूरी नर'र घर भेज ।"

वो अबै उण कागद मै पूरो करण बैठवी !--वालिद सा'व, आपरै नाव पै च्यार पाद लगाया है। आसीम। 'आपरी बेटो''' बयुव । वो पैटनटैक जिको नौहत्या सिंघ री तरै गरजतो हुयौ लडण नै आयो, अबै बिर नी दी नाई दिल्ती दे लालकिल्लै में माथो नीची कर'र पडियो है,

जिणमै नै लाखु लोग देखण मै आवे।

जुद्ध रो गिरज

जुद्ध रो गिरज पाधडा फँता र महरायो ।

माहा दिन आबे जद जुद मई ! वण मिनयपर्य दा साता नै मुद्र मरण साम जुद रो भेरण भी नदे-मदास घधनणो चार्व !

नगारा परणाया--धडड घडड जावे आमे इन्दर धडू वे

रणभेरी बाजण नागी वुनङ्क्ष्य सङ्घ । अजात शत्रु की सेना उपलत नमस्दर की नाई नगारा पडपडावती

आमें म मुद्र रा बादळ उडावती वैसाली नगरी ये चढ आई !

वैसानी नगरी इतियात रैपाना मध्य वादों नाम। मनैरी बात विद्याना रैहाप ! राजसक्ता जनता रैबुच्चोदै पचा रैहाचा मही। आ भारत रीस्थात केली गणतम्ब हा ! मानैती मिनवा राजमद रैगुमज भ लाबिस्पीदा ! दुबाठ अर बोचण न्यारी। दोन्यू पाटा रैपिबाळी जनता वज्जोडी!

पण सबट री तरवार माथे सटकती दय —मी सावशत। मुगनवरता मैं सक्ट म पक्षी हुवी जाण दैसाती री सगद्धी तरबारा अर तीर दैरपा सू मुस्तण मैं तमस्या। अहिरण पै ठणना पढण सास्या। घाला तीया होवण साम्या।

उण दिना पूरे उत्तरी भारत म बौद्ध धम रो प्रमाय दिन दूणी रात चीगुणी बस रैयो !

भागुना यह रवा । भागान मामकोट रैनजीन ही बौद्ध मित्रख्यां री अंत मठ हो । इण मठ री देख रेख मुद्द कुमारसुप्त नरे हा । कुमारसुप्त अजात मनु रैसनापति किसोरमुप्त रो मा जायो छोटो माई। बो पणा बरसा पैसी, वैसाली मे आर्यार बासो लियो ! अर्व अकिमानैती नागरिक अर मानैती धर्मगुरदामे गिणीजै ।

बैसासी री जन-परिपद रो समाचार भिक्खुवर कुमारगुप्त कर्न पूगी— आपर्न अरदास है क सगळा भिक्छुवा रै सागै आप समाराम (मठ) छोड'र क्रिंर म प्रधार जाको । जुद्ध री जाव्या जुद्ध करणी पडसी ।

"जुद्ध हिंसा रो प्रतीक गिणीजै।"

'पण, करें क्दाम आहिसा री रक्षा करण सारू जुढ़ धर्म बण जाया करें।'

पण, भिक्लुबर ने जलम-भरण रो काई मोह ?

भिक्तुना रो धरम न्यारी अर विचार न्यारा तो दूजी कानी क्षत्रिया रो घरम न्यारो अर विचार न्यारा !

भिन्जुना निस्कै करियो क बाज हिंसा नै सिक्सा देवणी है, न अहिंसा भी कायर नी हुनै, कमजोर नी हुनै। डण वास्तै घठ नी छोडा—ऑहिंसा परमो धर्मे

> बुद्धम् शरणम् गच्छामी । धर्मम् शरणम् गच्छामी ! सघम् शरणम् गच्छामी ।

पण, भो जुद्ध रो निरज ता महरावती हुवी आभै सू घरणी मायै जतरण लाग्यो ' उतरण लाग्यो—उतर ईज गियो।

पडड घडड घडड । नगारा धड किया। दुतड् अत्य तुतड् अत्यः। विगुल वाने।

۳

दीन्यू नामी कीजा रा समन्दर उक्कणे हुए * हरर । अठीने अजात गत्रु री सेना रा अजगर कुकाड करें तो उठीने वैसानी रे बाळक, बूडा अर मोटपारा री मरजाळी भजावा ४४की

मठ मू भिन्छुवा से टोळी निक्ळी बर दोन्यू समन्दरा रै विचाळै आयर कमनी।

युद्धम् घरणम् गच्छामी !
 धमैम् घरणम् गच्छामी !-

अजात शत्रु रो सनापति निकोरगुप्त ई नुवी अणूबी बाह्या नै देख'र

झुझळा'र आगै बंधियो । भिक्युवासू अरज करी, "म्हा आप पै सस्तर नी उठावणी वावा। भिनयुवा अर जोधावा रा भारम न्यारा-म्यारा हुवै ! याने क्षेत्र-दूजे रे मारम म नी आवणो चाहीजे ! जुद्ध री जाग्या जुद्ध ई ज सोमें । आप मठ में पघारी अर म्हाने लडण दी।"

वैसाली रा सेनापति भी अरज करी--- "भिक्खूयर तथागत रो धर्म **गायरा रो धर्म नोनो ।** महा इण भान वैरी आगळ आश्म-समर्पण नी कर सका। वैसाली में ई आग है। मुतन्तरना रो पाणी हाल ताई मरियों नी है। आप मठ मे पधारो अर म्हानै मारम दिरावी। दुस्मणा सूलकण दवो।"

परफराते धवळे उत्तरीय ने बाधे पे धर'र भिन्तु मुमारगुप्त मुळक'र कहाी, 'मन्नै राजनीति सूकोई लेणी-देणी नी है हुसी अहिंसा रै इमरत मु हिंसा रो हिरदी बदळणी चाव ! म्हारी तो केवणी है, क पर-सन्तरता स् बडां कोई पाप नी।" । झटके स पळट'र भिन्छ आपरै वर्ड भाई मेनापति विसोरगुप्त मू व ह्यो "सेनापति । हिसा री जीत खोखनी हुवै। इण नासवान काया में नी पण, अजर-अमर आरमा में जीती।"

वैसाली री सेना में बीर-हाक हुई, "क्हे प्राणा नै निखरावर करता हुमा मुतन्तरता री रक्षा वरस्या ! स्टारी रगत वैसासी-गणराज्य रै माथै पै पुकूरो तिलक वण'र चिलकसी । पूज्य भिनयुवर मारग दघौ ! म्हानै साध्-हत्या रै कलक सू बचाओ ।"

वूजै कानी सेनापति किसारगुप्त नै अक उत्तरै अर अक चढै। वो आपरे घोडे री पीठ ल उनक'र हाथ में तलवार नवाबती हुयो हाक्छ करी-कुमार गुप्त । व्ह न्हारो सम्यो भाई हयर म्हार फरज म रोडो मत

बण। हट जा।"

जुद्ध रो गिरज जोर स पाखडा फडफ्डाया ।

अन सीर सुसाड करतो हवी सेनापति रै बान सु टकरावतौ हुयी नीसरग्यौ ।

वम""जाणै वासदी में घी दुळची थागे बढी।

हिणाया । हाची विधाडया । तीर सरर ''सरर सूक्षांड करें । वावन भैरू, चीसठ जोगणिया खव्पर माड'र आय कमा ।

आप्ते सूआग बरसण लागी। विचाळ ऊपी साधुवा री जमात ! अेक-अेव वरनै धरणी माधै गुड-कण सत्तरया!

अर मूरजजी अेव पल रख रोकर देखण लाग्या। हवा री सास क्वगी। धरती री छडकण यमगी।

अचाणचन थेन अणूतो नौतन हुयो।

वैसाली री मेना हथियार न्हाख दिया अर कमयी ।—म्हा साधुवा री हत्या रो पाप नी ओडा ।"

दूजी कानी किसोरगुप्त 'रो हुक्स हुयो — जुद्ध 'रोक दो। निहत्या साधवा री हत्या स तो हथियार न्हाखणा मजूर 1"

गधुना रा हत्या सूता हाथयार न्हाखणा मजूर ।" विसोरगुप्त 'तडान' करता तरवार रा दो टून करनी आगी फेन

दीने। धीड'र पायल निवयु बुमारगुप्त नै नाधि पै उठा तियी । बुमारगुप्त रै नाना मे तरनारा री टनराहट अर तीरा री सूसाड बन्द हुवी तो बी रै मुण्डे सु बोल फुटचा— तथागत री जै।"

च्यार विसामा गूजी---''तथागत री जै।''
''क्यारगप्त री जै।''

ुनारपुष्प राजः जुद्ध रै गिरज रा बोन्यु शायडा बाट नाय्या । समै री तलवार गिणनै छाडै ? पून मू लतापत भिनयु मुमारणुल रे होठा पै जीत री मुळक गिरणी । बात्यो, ''अनै तमाराम (सठ) में भूगाय हो ! पासळिया म तीर रो

षाव हुयो है। मैं उठ ई ज सरीर छोडणी चाबू 1"

सेनापति तिसारमुख यो नै आप री भुजावा पै झिल्यो अर उण रै सारै सायू मानखारी भी भीड जाली ! सगळा अहिमा रै पारस मू पोना वण र बैर-माव भूत्मा हुया सागै-सागै जाले !

सामी गूजै ...धरती घरवावे—-बृद्धम शरलम् चन्छामी !

सधम् शरणम् गच्छामी । धर्मम् शरणम् गच्छामी !

22 मोत्या मुघो औसर

अर, जुद्ध रो गिरज कटघोडी पाखा धरती पर पडघो हुयौ तडफई ।

अर, हवा री थम्योडी सास पाछी चालण चाली। धरती री रवयोडी धडक्ण पाछी बावडी ! समय रो रय-धर मजला, धर कूचा, चाल्यो

जावै, चाल्यो जावै !

राज-मारग

आसोज नै जावणो हो, जर नानी नै लावणो हो, जनौ लाव गि । समें रा घुडला ने रोके, जेडो किण री जिलात । दीवाळी "मू जू" रा पगल्या माडती नजीन आ पूर्वा। चर-चर, गाव-गार, गळी-चौवार वी री अनावार री तिवारी होवण सामें। घर निर्धेक-पुतीज रैवा है। गैक अर खडिया रा माडणा महीजण लाल मिया। वगला, ग्रीळा-अथ बुगलर-मगत वण रैवा

है। पायबा फैना र अब जड़े, अब जड़े। सोपडिया री दूरो फूटी मीरवा रै मारी-मुटका मागवा लाया। यण, घोगळ बाबू रो बूढ़ो घर दुखर दुखर सैगा री तिमारिया में लिक्स-परच रोगे हैं। दूर्ज घरा जैडी, साफ सकाई, रेस-मेल, माक्या, साज-सज्जा उण जं मचू मी? दूर्ज घरा में तो लिटमी एम-एमा-एम करती आवती-आवती रेडी, पण, गोपळ बाबू रे पर सामें सो बा

जाणै झार्क ई नी।
गोपाळजी सुरसत रा पूजारी है। लेखक है। विवस्ता रै ज्यू तिल-गिला बळजी, पण समाज में इत्याव अर सोसल रै पणधीर अधारा मू मुझर मिनख पणा री जोत जागनी राखणी, हण सारू अपणी भाषनावा

अर विचारा रो तेल विरोवर पूरता रैव ।

ंगोपाळत्री नै शारुलै मडनै प्रकाम् व सू अक उपन्यास रा पांच सौ रिपिया मिल्या हा !

पूर्र अडाई बरसा सू पात-दिन अँक वर'र वो उपन्यास लिखोज्यो, पण प्रवासका ने तो सच्ची कथावा जैडी अर जासूसी, रहस-रोगाव री पोष्ट्रिया प्रमान करें । एक देस रो वो दर्शात है के जबने माहित री 'क का

पोषिया पसन्द हुवे । इल देस रो ओ दुर्भाग है क' जब्दो साहित री 'क, का रो पून ई नी जाये वे तो प्रकासन बण्योडा है, बर जो साहित रा लिखारा सैकड गैला!

है जै जगा री परिक्या लगा रेंया है। साहित रै उपन्यासा रो जमारो करें ! आबर अेक नुषौ प्रकासक घणौ सोच-विचार व र'र इण उपन्याम नै छापण रो होमत वरी, अर गोपाळ बाबू न पाच सौ रिपिया मिरया।

पसारी रो रोज दिनुने ये उनाई सू तम आ'र दी सौ रिविया तो उण नै चुनाया। कपटे रो कमी है नारण जोडायत पी'र नी जा सनी, बी रैअंक औदयो घायरी बणावणी जरूरी हो नियो।

हैलू रें डाडा में ऊन्दरा निसन दोड़ माग नरी, कबड़ी रमी, जार्ग भी जारगा पा पट्टी चुणा रै मार्थ भड़पाड़ी हुवें। गरस दो ऊन्दरा पड़िया हरता दबात में पटक'र फोड़ दोंगे। स्वाही, पैन, नागन रै सागै-सागै अनाज, खाळा, जुण मिरन, महाभा हो चर्स में कररी सागणा पड़मी। खरम रा

दिल्ली री साची काणिया री पत्र-पत्रिकावा वा री माग तो शरती, पण गोपाळ बाबू अंडी चोरी अपराध, प्रेम सेक्स री ओछी कवाबा लिखणी अधरम समझता।

हस चुनतो तो मोती ६ चुगतो नी तो सचक नरसी। साहित, अधारे में मटकिंगिया मिनका में सेकी बनावक साह दिवती रो उचार होते। पण, समे री पण्ड मंग्रिक होते। पण, समे री पण्ड में अवारे हमाओं चुराधुर गळ वार्वे—आवारक री कोटिया पिस पित'र छोटे हुवमी, केरताह मुरी जैटा मडरिया रे मार्चे पातसाही रो ताज सजावणी अर साहबहा औडा पातसा में, बेटा रे हाया चेल री ताडिया म बुदागों बीतावणी— में सीन समे रो खेल हैं। तो छोटे-वड़े मिनवा रो काई मिनवा यो ना स्वान स्वान स्वान स्वान चवा समे सुन में अवार सामे अवार सत्तो चचना करता समे सीन सामे स्वान स्वान

जद भोपाल बाबू दसमी रा इम्त्यान में पास हुया जद ई बा रै नारोका गोसीस कर्र पटनारी री नौकरी दिखा दीनी। नामीसा तैसीनदार रहेता। नेताना जद अमसरा सु भी भोदी जामार्यन्ताना राखता। काराजी शाल जदर रसी हो। गौसाल म नाभी री होडाहोड में समीना दी बरसा ताई उचा री नाभी पीनी इनाम दीनती रेसी हो। बा री समन तो साहित सू पक्कायत लाग्योडी, पटवारपणा री ज्ञिष-क्रिक वयू वर जयती ?

भावनावा रा ब्रह्मिया ने कुल बाघेर राख सके 1 वे तो नोकरी छाड-छाड'र जेक छोटे अखबार से पाम करण लाग गिया पण, उठ भी जम नी सिनया।

दीवाळी आ पूरी। वास सु वस अंव दो दिवळा तो पर रै बारै टिमटिमादवा ई बार्स । यू तो गोचाळ जो री वोठरी से तो अंव दिवरी बळती ई रैसे। जिया रै उजास से गीपाळ बाबू लिखता हुवा निजर आहे।

प्रकासक उताबळ कर रैया क' यीवाळी तर्द पोषी तियार कर'र मेती।
प्रकासक री बतायोडी बाता ने मूर्य'र उपन्यास निवर्ण रै औछ बाम स् बा री आत्मा कुरळाट तो करती, युनवारतो, पण गरत री गरक मू आत्मा नै मार'र तियबा में जुट गिया। वी पोषी सू दो-तीन सौ रिपिया हाथ लाग-सी, जिंग सू तिवार मन जाती, चर री लिछमी अर आवर्ण बारते दो चार कर्या भी सम जाती।

लेखनां रो हुठ जय चाली ! लिखणोईज उचा रो शीवम । मरजाटी माण किसो बार जमळ'र लाई, पण पडी-मडी सीळी पडमी । पाछी चनाळ, जस सार्व । अस्त में उचा रात वा चाम छ बार उनकुर नाळी जर होयों, हो बार पेनची ज पडी । पण, गोपाळती रो समाधी नी दूटी । फोडायत खोज'र नजम ई ज बामली । जद नटेंडे केन नप चार पीती ।

विमनी रो सेत जवाब दे बैठयो । रात री बारे बज रैसी । मार्च म पबरर प्रावप साम्या । कोडायत जुले मे सिबु ड'र बैठी । आपी मृती आधी जार्ग । अधारो, नगरे मे पसर भियो । चातार भी बन्ध में ताब निमन्त्र मीद रा सामर्दम जूबयोडी । योडी-साळ सोच'र पत्नी मू अपदास बनी, "मे जाओ तो, योडाप तेल पटीस रा माराज मू घरवा लाओ !"

जोडायत निष्टमी योज'र बोली, "अब तो सोबायो'सा । सरोर रो भी थो प्यान राजी । इसी रात खुणव मर तेल रै मार पडीमिया नी जगवणी आठो नी लागे।"

नाधिर वर्व नीद नेवण रो निस्चै ह्यो ।

सामैसाम पीपल री डाळिया पहेरू पैचाबा लाग्या । अलारक री

नू र डो "नु न डू ss कू ss" बोल्यो तो अगुणै भाख-भाटी ! सूरजजी झावया ! पण गोपाळ बाबू खरीटा खैचता हुया मुता हा । सिष्टमी चठी ! तगारी में गेट ले'र पडीसण रै घरा पीसवा नै चाली। आटी ले'र पाछी वायडी तो गोपाळ बाबू ने अमावा लागी । हाथ लगायो तो डील तर्व रै ज्यू गरम । बुखार धर्षने । बा चबरा'र जगायो, "आप सा । आप सा । आहमा खोलो । याने तो युखार है, अरे बाप जी रे । इत्ती गरम है डील ।"

लिष्टमी चीखणो चावती, पण चीख मी सबी । बण्ड रूध गियों । आह्या गळगळी हुयगी 1

।" कोई पइसर नी ।

"मुणो जी, आख्या तो खोलो । उपन्यास नी सियणो है बाई ?"

भी री आख्या स गरम-गरम दो बामवा री बृदा टप् ' टप् गोपाळ बाधू रै गाला वै जाय टक्की । आदया खुली, पण सगळी बील जाणी झवडीज गियो होते। सरमार्डज नी ! "अरे राम जी 55 । म्हारी टील तो पानयोई पोर्ड रै ज्यू दुख रैयो है।

अरे धारी आख्या में आस्टा वयु ? - - वावळी, तू नचीती रै। ओ उपन्यास पूरो हुवैला तो तो महारी इलाज भी व्है जासी, अर चाय, गेह, वाळ रो बन्दावस्त ही हो जासी । दीवाळी रै दिन घर रै आगणे दो-चार दिवळा दिमदिमासी ।"

आसा री सन्ति मृ वै उठ वैठना । जेव मे घणा दिना सु पढी मसेरिया री गोळी गळा में गिटकी अर क्लम साथ छीवी !

अन दो तीन ". दिन जावत नाई जैब लागै।

चौदस !

डानियो आयो । प्रकासक उपन्यास री तै-सुदा रकम भेजणै री जाग्या पाण्डूतिपि पाछी लौटा दीवी । सुझाव दियो'न थोडो सोन श्रीजु रोमान्टिक बणा दिरावो । नायिका मै दो-स्यार जाम्या अमता हया दता दिरावो ! नायक मु विरोधिया री आपस री लडाई रा दो-तीन पाना औजु जोड'र

थेक-दो रा खून करवा दिरायो—पछेछाप देस्या । अँडी ऊची रचनावा आजकाल कुण पढें ?"

च्यारूमेर जगमग करता दिवळा जाग उठधा । जाणै घरती पै आभै

रा नवसव दिनद्वा पानणा हुने। गोपाळ बाबू रै काळजे मे भी अंक तो बळ रैयो है। घर 'म्मप 'म्यू''म्यू''। यू तो सुरस्त रा पुजारा रै मन मे रात-दिन अंक जोन जागती रैंबे। जिया सू वा रो कलम चाले, पण आज जो आग गोपाळ बाबू रै यन मे जागी, वा स्वाधिमान री आग है। अपमान सू मानल।

उपन्यास हाय में ले'र उठ खड़ा हुया । अंक दिवळी घर री पीळ में अधारा सूजूझ रेयो हो । उण रै नजीक पूता । कापती ली ने अंकटक देवण लाखा । उपन्यास रो खणो लो रै नजीक खेग्या !

' गोपाळ बाबू ऽऽऽ ।"

डाक्यों कवी आधाज में नाव पूछ'र अंक तार हाथ में पकडा गियों !

बाय-बाच फेर बाच्यो ! विश्वास नी हुयो । सुरसत इत्ती निरपा उन्न पैनरेली ? मुक्तो तो नी है ? जास्या पै हाय फेर'र पाछो बाच्यो ।

लिछमी मजीम आ'र अजुम्मे मू चें'रे रा उतार-चढाव देखें !

' नाई हुयो सा ? निण रो सार है। म्हारे बाबोसा तो सावळ मेण ?"
"मैली ! मुरसत पावणी हुई है। सार'ने महने में जो पोषी छाँ।, उन्न पै अनादमी मुपाच हजार रो हनाम मिल्यो है। जो बघाई रो सार है

ये अर्जन कमरे म वाबहिया । नुरस्त री मूरत में मापी नवारः । लन्, बहबबाया — साहित, साहित रे बाग्ते होक्यो चार्व । मुवारव रे कन्द्र १९ । किया में समाज में जेव नृत्री कांनि वरणी है। अरोव रा अरुक १८ ॥ श्री बंगा जनव-दुनारे राजणी है। जर जो दूर-फूट जार्ब, इन्लंश्ने मुक्त श्री करणी, बच के सही-नाजीं जी।"

अर तुर्वे उपन्यास री पोषी रो खूषो कापती तो मू पेर १८०० आप्ता री जीत हुवी । साम ने आम नी । सुबह रा सदक्या १००० १८६या ना परा वावड जावे तो वा ने सदक्योहा नो वेंबे !

पू च गू उ कामद नाय अपह नीती । उल रै उरण ई मीता ह बड़ नै पाठों अपनी मारम बला दूर-दूर तोई सपा बील रैन कु 1 के महरूर पमरण्डी प्रव सीती ही जल नै छोड़ पाछा राव मन्द्र है आय उसना

उनद्रो. दुधा धोयो राज-मार्ग ।

मुत मरियो हित देस रै

गुत मरियो हित देग रै, हरच्या बधु-गमात १ मा मह हरगो जाम दिए, जनरी हरधी आब १

(शब्दाव शिवारिया) यगत रो सहहम वेडाई रिलना नामुरा कर वालां में यूर दर्वे । यगत करा सुभावी अरकडे का र डेरा स्ट्रावारी कुल वाले, पण का बात सापन

जनवारी न' इण री बाळद अर्ज तार्द तो चालती ई रैयी है लगागर। पण ई समैं री पोधी में आपरी नाम माहणियाँ मिनच इतिहास बणा जार्द। इतियास बणावणियां मरदां में अंग नाम मेजर पीरूसिय रो भी है!

सत्तास वर्गावानामा सरदा से अव नाम नन र प्रास्तास राज्य है ' मण भावा ! हुनारो देवता देवा तो बात वे बेण स रता आवे ! प्रावा री पट्टियां खुतवां क्षी है । मेजर पीरुसिय री आदरा गामें अपनी मर अर रकाही, आयंती-सातती रा दिख पूमल साम्मा । मा रो लाह, गीव री ज्याकी ने क्षीर हुवा बेटा रा वारणा तेवती हुवी जडाव

कुबर री पछ विश्वळ बाट्या, चर्चियोधी रो भीज्योहो युपर, गुगरा, बर उप जिंते रे रामपुरा गांव रो बारग---से बीरी बांट्यां सामै उत्तर-पड़े । वार्ण पिन्त्र री रीजो चालें । "मा, मुखारी हुए मुखोडो हु। म्हारी छठी राजपूत बटासियन, 'उरी'

रै पीरवण्डी अर सेडागळी वेडो पहाडियां वै जीत रो निसाण केराय'र देस रो नाम जजाळियो हु !" नवी-साबीडा नै ची अँ सगळी चाता मांड'र सुणावता, तो सै वर्व स सुमैसा ! सेजर मन री रगरळियां म हुव रैयो ! ---नी [।] हुकारो चूक्या तो वात री कराामत खतम हुय जावै । हुकारो देता रैवौ तो वात कैंक्य मे रस आवै [।]

हा तो ! सरज घरनी रे पो'रो दे तो हुयो, जायूची उतरणे री तियारो करें ! मृत्याडी तोरू फूना डिट्या से सरण निरध'र बादळा रा गान लाज स मिंदूरी हुई गिया । पीर चण्डी भाचर रे जेन भाटे ये बैठचो पीरू, घर पी अंतरण दे बेठचो भीरू, घर रो आंठचा रे बत्तुळिया में उड रेवो जागोबाच बतळ कर रेवो ! अचाणचक केन मिनाई बाई किसान करें—

' नायरलेस स् हुक्स हुयों है क' राजपूत रायफल री छठी वटासि-यम जरी' स् हट'र टिमवाळ जावै । टियवाळ सू रिछमार गळी री मुरनसा गरणी पक्सी।"

— जब हिण री । कूच करी । मुतन्तरता सैकडा वरसा स् मिनी है अर मिनते पाण देस रा दो टूच हुव मिया। पाविन्तान कथाइनिया री मदत सु कामगैर री वेसर री वयारिया में बास्य विद्यावण नै दौई। ••••

जाधावा ी म्हू स्हारी मेजर हु, पण स्है म्हारी भुजावा हो—कच परण म जेज मी हुक्की बाबें। जबें तो आपा टिचवाळ पी पहाडिया सू ई ज उमता हुया सूरज नै सिलामी देस्या।

-- 'यटाक चान्या मजला मिलसी ।'

लेपर "राइट । लेपर " राइट । घर मजला-धर कवा ।

िण, पळन, पडी, अर पोहर बळता-बळता किरत्या बळी । समै कद यमै । जगूनी परमात री गुलाल उडवा-उडता टिचवाळ र भावर पै डेरी ग्हाप्ट'र'''जनमलोम नै नमस्वार नीवी ।

---हिन्दुम्तान । जिन्दाबाद ।

रिष्णार गडी बर दियबळ मे तीन बोस रो आतरो ! रिष्ठमार गडी ऐ नदाइतिया री बडी निजर । बवाइसी, इरारवही-आवर री बन्नेबाळ-दानारिज बोरी दे निजर । बढे बढे से सार बनाया हुया । पैलां इस जान्या सू दुनगण ने स्वेदण्यो पहती !

माजना बणी ¹ सकडी घाटी सू चाल'र पौज आगै बड़ी ¹ दुसमणां रो

30 मोत्या मूचो श्रीसर पश्चिमारी मो है ती। पाटी में हमली बोल देवें तो दो पाटा विवाळ धुन

जेडी दुरगत।

पण ''हिरोळ मे कुण ?

पीरू सिंघ री प्लाटून रा जोधाना दौड र धणै उमान स हिरोळ शाम्भी। प्लाटून सावचेत हुय'र कूच करी।

धाय प्राय ।

धुरामः । घडान ।

इल तर अचाणचक हमला री यास को ही नी।

पण दुसमणा रो आनध्या में लोही नी हुवे, उराटियो हुयौ विस हुया करें? सकडी घाटी । दोन्यू कानी खन्दना खुदधोडी, अर, खन्दका में लुव'र बैठमा हुया दुसमण । अणबीत्या इण हमला सु पीरू रा आधा सिपाई

घायल होय'र पड गिया । अवै शिया पार पडे ? — 'जै रणवण्डी ! जै जोग माया ! जय कमधुजिया करला राठीड !

पीरू बकाळ कीदी बर साधीडा दें रगत में उक्काळी देवण मारू नारा सू आभो परणावता हुया कुझल लाग्यो ! साम मुंतीपा रा घरनाट उड़ें ! तोषा दें साम स्टेनयन सु गोळिया रा

अ गीरा विकेरतो हुयो मुखो नाहरियो झपाटा खेलैं। सैन डू सियाळपा मे सिय अ केलो ई पणो ! तारा री अंवड में चाद खाळियो के मन्ते!

तोपार समय धरणी अर आभी दोन्यूँ धूर्य । वासदी रो समन्दर

क्रफणियो · · · शू ऽऽ शू ऽऽ । जो, जाय पूर्ग्यो सिंघ दुम्मणा री तोषा री ठौड । अर तोषा अलाव-

णिया कबाइली, वीरी धानळ मू मायै पग मेल'र भागता निजर आया। घणखरा घरती पै पड'र कुरळाट करें। तोपा रा मूख्या वन्द ह्या।

धणवरी घरती पं पड र कुरळाट करें। तीपा रा भूष्टा वन्द ह्या। पीरू जीत र मत में दवाळ करी—"जोघावा ! दुसमणा री सस्या

परि अति र मत म दवाळ करी—"जीघावा । दुसमणा री सस्य देखर डरपणी ती ? सैकड्-सियाळवा मे क्षेक ई सिय घणी । वहो । ।"

पण, लार कुणई होने वो सुणै ? से बीर दो पाटा निचाळे फम'र तोपा री आग में फोत सेन किया!

री आग में फोत खेल गिया ! —''आगे बढी ।''—रंगत मू लतापत पीरु हुकार करतो हुयो मुड'र देखें तो अंक भी सिपाई निजर नी आई ! सैंगा री लामा। पण मिछ रै किए साय जोहर्ज ! — "राजस्थान री माटी !···दहारै छोटे से गाव रामपुरा रो ओ रू अन्न रो पूरो पूरो मोल चनासी !···मा ८८ ! जडाव कवर मा । धारी

ख सजाई को है की।"

'''बाता में हुकारो अर क्षेत्रा में नगारी । हुकारिया रैपाण ई ज तिमे रगचढै।

तोपा गपळको रूपा साह पूफाट करी। घडाम । घडाम …! घघनता गोरा री बिरखा हुई, पण हुई। पोरूरा काना मे तो अक ई ज आवाज गोर-गोर स सुपीर्ज—

बेटा द्रंघ उजाळियो,
तू नट पहिसी जुढ़ा
नीर न आवे मो नमण,
पण यण आवे दुढ़ा

भारता पै बेवर्त रात रै रैं के ने पोष्ट'र आपी औट न्हाची। देख्या। आपी तीपा रा मुखा सन्द । भागता हुवा दुनभणा ये पीष हथयोळा रा बार परतो हमो बड़े, बई '''बढ़तो ई जावें''।

घर नृषा"'धर मजला।

बटाऊ ¹ चान्या मजता मिलती ¹ बिजळ रो चळरनै, सुमाड नरती हुयो श्रेन योळी मार्च मे साय ससी ¹ जोगो चानरतिन्ती साय'र वट नियो ''चन, श्री सी आख्या मू पायती री

धरा छिर नी सकी। हपगोठो सामियो अर खदन में पूरे जोर मृबसाय दियो ! सान्य

ममरी अर एटन उटनी। महारेव रागा मन्द्रा बोच्या आया अर लाज्बी जीन नाह'र गरम महारेव रागा मन्द्रा बोच्या आयर झाऱ्या, विस्थिताट वरना हुया हुते।

पारियां क्षेत्रों न धर-धर धून रैंदी ! पीन वायम, ब्यानमेर रगत री पी

नष्टमण रेखा खिच्योडी ।

---- मूरज में निमम्कार । ह परमपुरस ! हे उजाळा रा धणी ! यू साक्षी है क पीरू । ठाजूर लालसिंघ रै च्यार बेटावा सू सगळा सू छोटा बेटो पीरु मा जडाव कुवर री आख्या रो तारी पीरघो रामपुरा रा टाबर पीरू राजपूत रायफन री छठी बटालियन री अब प्लाट्न रो मजर पोरू सिंच आज सीव पँ दूसमणा री सासा रो तक्यो बणार अमर अट्ट नीद लसी।

- उप रै मार्थ म जाण ओळचू पी फुलझडिया छूटण लागी-

--- 20 मई सन 1936 म सिपाई बण र अक सौ अक पैली पजाब रेजिसट म अन्तम गयी।

1940 म दखण सीव पै झुझ र अलम रेजिमेटल सन्टर म प्रशिक्षण हुयौ । नवस्वर 1945 म कम्पनी हवत्रदार मेजर रो तुकमो लाग्या। 1948 म पीर खण्नी अर लडागळी पै जीत रो झण्डौ गाडची तो देस रो भाल कचो हुयो अर मा चामुण्डा रो खप्पर भर र अक्लो पीरू सैक्या कबाइलिया म अक्लो-आज 18 जुलाई 1948 अक्लो पीरू!

दिन सिरक्षा काही जेज लागै

अरर SS । आख्या रै सामें इत्ती अमारी ? सास चुटीजण लागी दूर दूर ताई आदमजात निजर नी आवें। पीरू सोध्यो भरता मरता अक्-आध नै और सार सक् । अरे । जीवणा हाथ कानी सळवळ सळवळ किंण री ? खदक ? आ खदक वच्योडी ! इण म अवस लुक्या हया है कुणई ।

राम जी भला दिन देवे। हवगोळो अ क विषयो हयो है--हे भवानी मा। समती दे। आखरी सास रै समनै इण खदक रो फटाको छोडण रो

हथगोला रो बार । खदक रा भाटा धडघडाट करता हुया च्यारूमेर

चाव पूरा होवणो ई चाहिजै ।

— BEIH !

विखर गिया ।

हिचकी !



34 मोत्या मुघी शीसर

धडाम घड घड धडाम ! काळ पुरस खुद उण दिन जुद्ध देखण ने सेमकरण री सीव माथै पाछ पसारियों हुयी । इण सडन पै चीमा गाव नू थोडोक आंतरै दुनिया री

नुवा अजूबो-पैटनटैका रो जमावडो । पैटनटैक जिका री मजबूती पै अमेरिका नै गुमेज ई अणूती । इण लौहा रै दैत्या पै बैठ'र पानिस्तान रा सदर अपूर्व दिल्ली री किल्ली उखाड फैक्ज नै उताबळा हुयोडा ! लाल

किला रा साल लाल मुपना देखें। घडाम घड घड घडाम 1

दैत-राज गोळा उगळता हुया, घर्व बद्धण लाम्या । दस सितम्बर सन् उन्नीस सी पैसठ रो बी दिन घुनाधोर अगियो।

कठै तो जम रा दूत सिरसा लोहें रा पैडन अर कठै भारत रा जोधावा री छोटी रिकायळ लेस तोपा अर हथ-गोळा । पण हिम्मत-विस्मत होय बिन हिम्मत किम्मत नही।

हमीद बाकळ करी, ' जोशावा । जलमभीम रो करज चुकावण रो ओ अणमीली औसर। देस री रबस्या रै जग्य म होम दी ओ माटी री तन।

महारमा वधीची तो जीतै जी अपणा हाडका ई दान कर दिया हा ! हिरदस्तान जिल्दाबाद¹

मूरज अपणे रथ रा सात्य घडता नै रोक'र इण अणूतै भरण-तिवार नै निरदाण सारू यम गियो। इसा इचरजनीय उदाहरण सैकड् धरसा म सर्वेई ज देखीजें।

धुळ रा बतुळिया सु घिरीज्योडी अ व जीप । जीप पै अ क छाटी तोप अर उण तोप रै पाखती बैठचो हुयी हवलदार हमीद ! स्वाम्भर लोहै रा देत विघाड रैया । जम-इता रै विचाळ फरयो हुयौ हमीद-जाणै महा भारत रै जुद्ध म चनव्युह तोडतौ हयौ अभिमन्य । दाव पै दाव ।

हमीद नी पज्यौ । जीप घेरो तौड'र अवानी सौकड मनाई । दसमण चररीजगिया। बोकाई बीतक।

हमीद अपणा साथिया म जाय मिल्यो-

हवलदार हमीदः 'जिन्दाबाद !

अवसियोडा दुसमण दुणा किरोध सुलपकिया। हमोद रातो आज भूतिया बिश्वेर न्हाया ! इण री गिरै-दसा रो बाको आयम्यी ! इण री इत्ती हीमन के घेरो तोड'र माग जावै । इण रा फुलदा-फूबदा नी विखेर दा तो म्हा इस्लाम रा वदा ई नी । बढाओ पैटन---चीथ न्हाखो ¹

. बाळो भाखर जेडो पैटन घडघडावतो हुयौ हमीद बानी नटाटूट वडतौ

ई आवै ··धडाम धडाम· गोळा बरसै—साय री सपटा उछळे ! हमीद री आख्या में अधारा छाय वियी ? चडीक जागै आभी में उड जाऊ बर्दैक जाणै पाताळ मे वड जाऊ । घरणी, आभी, पाताळ सै टैका रै सरणार्ट अर घरणार्ट रै धमीडा सू धूज रैया ! पैटन ऊची जाग्या उलाघती हुयो बिधयो । अचाणचन हमीद नै तरकीब सूझगी । बीजळ-सी पळकी । पैटन री खबाडी छाती री बमजोर जाग्या देख र हमोद हवगोळै रो अचूक

बार करियो- से हिवा फुटा । व्हारा उडतोडा पूर्जा देखा ।" घढड '''धडड ' घड '''घड '' धडाम 1

टैक री विदी चिदी आवाश में उडती हुवी दीसी !

हमीद जलम-भोम नै निमस्तार कर'र दड्डियो-आयोडी रै तो षाई वारी लागै नी, पण माटी रो पूरो-पूरो मोल चुकाऊ ला । भारत-माता । मन्नै आसीस दे । अंक-दो पैटनटेका नै अज टावरा रै रमतिया ज्यू

बिसेर न्हाखुला ।

अरिया री आदना आमै अमावस री रात । अणहोणी कीकर हुमी ! मो आदमजात है क' रागस । उणा नै तो चढ़ै र उत्तरे । उत्तरे र चढ़ै। इतियास रा पाना कडकडाया । मुरज बी, पैटन सी चिदी चिदी

उडनी हुई देख इचरज म् शास-पीळा हुय गिया ।

दुजी माखर सरवियो । अगारा वरसावनो आधा रै ज्यू घडाघड बटनी आर्व । हमीद सावनेत । हाय मे हथगोळा से'र तिपार-- व ती मरणी वै मारणी । औमर देख'र गोठो फेंब्यी, जाणै इमरान री बोलिंग र्देग हुयी ।***धडाम्***धडाम् **1

इतियास आस्त्रा टमना'र देस्यो व दुजीहा पैटनटैवा री चिदिया पटारा री सड रै ज्यू ध्यारुमेर विधरमी [।] अेव '''दो टुकडा सूर्जुर्जा<u>,</u> रैं 36 मोत्यां भूषो औसर रथ मे जाय पडघा । घोडा भडकीज निया !

हिन्दुम्तान - जिन्दाबाद ।

पण अभिमन्य अंशली । अंब घेरी तोडै--दूजी नियार । दूजी घेरी नोडें तो तीजी तियार ! चत्रव्युह रा सात-सात घरा ! देवा री पूरी रेजी-

धधळीजग्यौ ।

समायगी ।

मेन्ट 1

अर भेर जोन, बतीस बरसारी बीर आत्मा-पूरव यो जोन मे

तीजीडो शाळ भैरू सिरसो टैंब धर्व बढियों 1 यी रागस रै मूच्डे सू

आना रो भनुळियो निक्ळ'र सरणाट करतो हुयो हमोद सू टक्ररीज्यो !

मरज री आह्या चनच्छीजगी । मन्झ-दुपैरी री दिन गुरळिन्या बेळा ज्य

विगत—अेकल अचपळियै टावर री

पाडकराट करनीका सबै रा पाना । पाना म लिख्योडी अंक अचपिळ्यै टावर री बिगत, इण मुजय। पाच-

वाच नदिया दै पाणी स तिरपत पजाब में ओन' गाव, उण 'रो' मेल्लियाबाळा बाब । क्षेत्र करको लाहर बरमाँमच अपने शासिया दी टोळी संगा'र नित नुवी, अण्ती खेल खेलती। विणी रै खेत म नुकमाण करे, बदेई विणी

रा लट्टरा अपटर खीचे, तो ठोव-कट'र भाजे । धाप'र अचनछो, हिमन रो धर्णी । भाख'र रै टिल्ली, देवै जैडो कोत्रियो पण, काम धरण रै नाव म ई मायो ठगकै। भगाई-पढाई री तो बात उड़े जठा स ई झठी । पीसाळ

रा पहित, घर रा सगाक-सम्बन्धी, पास पडीस, सै समझावण म कसर की राखी नी, पण विद्याता लेख ई नी लिखिया. तो किण री जिनात जो उग

नै पढा सके। डीलडोळ रो गोळ मटोळ—बजरवटट । पाड अर अचपळाट रो तो की छोडोई मी। चण रै नावोसा फीज मे जुनियर कमिमण्ड अफमर छैता। नरमा रै भेर ईत जिह--मनोमन ईंच्छा-फीज में भरती होणो । श्रेकदि त समा-

जींग री बात बेडी निवहीं व सलियानाता गाव म कीजिया री भरती भाई । नाहोत्या आप ई तिरस्या नने आयो। रामओ री निर्या हवी । अर

छम्बीस बरम रो बो मोटचार भरती हो'र उमायोहो रहीर हयो। मायन गळमळी जोख्या स माथे हाथ कर'र सीख दीवी । "जा बेटा

जा ! मायड जलमभोम हेलो मारै म्हारा जोघ ! वैरियां ने बना दीजे न' गरमो गियण रा हांबळ चम्बोडो है। म्हारी दश नै सजाईजी मनीता। जा

माहला छ। ।"

38 / मोत्या मुघी बौसर

दिनाराहस उडताजावै अकि,दातीन च्यार । समैरा फडफडाट करतोडै दुवै पाना पै करमसिध रै नामै लेखो महनाडो इण मुजब।

1944 अरारान मोरचो जापानिया स लडनै सारू भारत रै सिपाया री टोळी-सिपाई करमसिय मौत सुभी सडनै न्यार। दूसमणा म भूखें बाप रै ज्यू झूझ र च्यार बार धायल हुयो । सिर्र जोधा इनाम मिलिटी-

पदक ! सिपाई सु ऊची- लास-नायक री पदवी । 1947 हिन्दस्तान जिन्दाबाद । भारत रा मानवी आजादी रै पवन म मास ली। जम्मू-कश्मीर रै अगुरा पै पाकिस्तान री सार टपकै-टियवाळ री पहाडिया पै बास्य गिंघावै । लेक्ट राइट अकट राइट !

भारत रा जोधावा रो उन गिंध नै हटाये अर देसर री सौरम फैलाये सार क्ष । सिख रेजियन्ट री पैली बटालियन ! लेक्ट राइट अवट राइट !

हुमलावर ग्लिध रै ज्य ताक्योडो औसर देख र झपाटा मारै।

13 अन्दबर 1948। लास नायक शरमसिंघ रै सामै तीन जोधा । दूसमण नै धक बढणै स् रोक्जै अहियोज्य ।

> अमगळ बिन अपनी दियण बीर घणी रो धान।

(सर्यमल्ल) सत सिरी अनास !!

धडीद धडीद[ा] द्याय धाय। अल्लाह हो अकवर।

हर हर महादेव। जाणै भाखर सू भाखर भिडै।

ओं इ हो तील जगाउ कमा जिल्ली I

रण क्षेती रजपून री। जाणै वाजरिया रा सिट्टा टूटण लागा। दम-दम हमसाबर मु जेन-जेन जोधो नी पिजयो !

हुतमण हाबळ-माबळ होय'र माग छूटो। धकै बद्दणो अर आप री खोरपोडी खाई मे आपने इज दफ्न होणो, अब इज बात।

दार अर जीत हिष्यार्थ में ने बहै, न सब्या थे "जीतण साह गया रो मोह छोड णिया अर होसतो राजिया पाहीने। करमसिम रो एक साथ राज साम रो एक साथ राज साथ

ताचा राण ताप रेजू थावा छात्रयाङा, पण हायता युन्दा । रायण्य सूर्णिण-गिणारं युडावतो ¹ खेडो अयुक्सो अर श्रेडी मार पडतीदी देखर वच्चोडा हमनावर हूंगी वार फेरपीठ फेर'र माग छूटा। अल्ला जार्ण, श्री मिनस्र हेण'महास्व रोगण।

सत् सिरी अकाल ।

श्रय गावळ पड़पा साथी रै पट्टी बाधती हुयी बरमिनह उपने सायागी धीनी। पण छळ मन्डियोडा बुसमण तो इण जणा पे अवस्यियोडा, हार्यै यात हुनती तो अनेण सागै गयळनो कर'र ईंटरार ईं को सेवा नी।

पाना रै दूजै पसवाडै लिख्योडो लेखो इण मुजय।

होठ-पडी रे बाद दोन्यू मानी सू तोषा गरवी—मीळियां री सायहसीछ निरवा, जाणे आनास रा नवलव सारा से झडण साम्या ।

लास-नायक मद चड़ियँ हाथी रै ज्यू विषादियो । से मिनल नी । गागर-मूळा है । इण खोदघोदो खाइया से सयळा नै दफण करणो है---जे राजकारी :

जानै बीर-समस्य रो बिनोवना होने, सहसै सारू गोळा अर गोळियाँ गिजमी री बीनमोडी। यस सहसे रो धनी उनायो। तन ने पुसतोडी गोळिया जानै नैनामाडी नाडे। च्याह सूचन में नावळा सोही -सूपोडा—प्रतायह, किरक्ती रे वपू फरस्य जाने खेत नाटणे साना। "पन" अ र र र "दो जोगा केकस साने ब्रामाबळिया हो र प्रक्रिया। तीचो हसतोडो सहीर दिश्यो। करमाबिय जेकलो—हसपमा रो छै ई नी।

गत् सिरी अकाल ! करमाँसघ बोन्यू मायल साधिया नै नाधै पे झेल'र मुरावनत जाप्या खोजतोडो नजीव री चीवी कामी सपवियो । वाधै पै दो सानवी देह रो बोल बर हाम मे हवगोळो । मा रा बोल बी रै वाला मे

1

40 / मोत्या मूची जीसर

घडो-घड़ी मूर्ज-जा बेटा वा-भायट जलम-भीम हेलो मार्र-म्हारा जोध! बीर्सा ने बता दीने व' क्यों सियण रा होजल पूर्योडो है। स्हारा दूस में सजाइजे मती, जा। लाहबा जा 'यानिस्तानिया दें अपूर्ण रो पार नी। अेक्सो स्पासिय पावा छनियों पर अरिया रो दो टोळिया नै धड स्टावतो मजला प्रयों!

रिक्स्या चौकी रा जवान उन रो जोम देख'र दग। उना रै रगत में इरमासिय रा बोल आग रा भयका जब चौगजो बळ बदावै।

समें दै पाना रो ओन खुणी मुडियोडो—जण पै—मोटै आपरा में लिख्योडी बिगत । इण मुजब ।

पाबवा हमलो । विषय जायो च रसिय जायै—बीजळ रो हुमडो । जोघावा रे पाता पे सत् किरो अवाल रा मस्तम सवावती हुयो दीड-दीड'र जोस वधार्ष वण रोम-रोम स् वैवतोडो मोही जण रो अस धीच सियो। से जोस स् बोल्यो—"मां । वारो दूध लजायो मी है। देस रै धातर करना रो अन-अन किरण काम जावेसी।" मरीर धारी होवण सामी—अर अंग जवान रे कार्र मायो देग जुढ रो दिस्स निर्णे—अपचिस्सा हो पाहिक्तानी सियाई नजीक री खाई वाली वस नियोदा बखत साबै वरसमिष देखती पाण मचने बारी नुदर दोला। री किरच्या विखेद दोवी।

हमलावर भागता ईज निजर आया । उबै चौनी पै वय्जो करण रो

मुपनो देख्यो सोई साव कूढो ।

मगळा हेटै जण विश्वत रो सार सुनैरा आयरो लू महियोडी इण मुजब।
—अेक अवचळो टाइट बाळपणा राड करणियो—सिवा रा दात गिण-णियो, भारत रै भरत, जैडी राड माडी कै पाय-पाय बार सक्तक'र स्मावेड हसामणा रा दात जबाड'र—परमवीर चक्र जीरयो ३

मणा रा धात उखाड र---परमवार चक्र जात्या र सूर हटै नह समर सू, हट्ट निभावे पूर

सीस नमावै सूर नह, सीस वटावै सूर।

—(नायदान महियारिया)

राजमुगट

भगवर समद अपाह, निह हूमा हिन्दू-पुरक मेवाड़ो, तिण मोह, पोच्य चून प्रताप-मो १

रा है उस देन में, जिल दी मांडी, नाडी, नी कु कू है। जिल वो पानी पानी मी सरजीवन है। बिल है बेबार है औडी-बेबर छारी, जिल में जलानोंस दी आन मान कर सरवार दी एटाऊ दै धारित मैं कड़ कूँ मी, अनिमन जोधावा दें सोही पी बीधी मुगाब आज भी निष्टनी पड़ी है।

क्रियोगारी में ज्यादी एक से पंकित करा महत्यी पार्थ है। क्रियोगारी में ज्यादी एक से पंकित करा। बरदानगी से मूछ से विदेशका। इण ठीव में द्विना मित्रमानार करें। एक मुनावत माजमाना करती हुन्त प्रतार, जार्थ रचनकारी से जीव करवारायों। बोही रा सुदरा मृत्यी प्रमार मुं हुळ्टीमाठी के सामानी करवी हुन्ता स्वरती प्रमान स्वरती प्रमान से क्यारी प्रमान स्वरती प्रमान स्वरती प्रमान स्वरती प्रमान स्वर्ती प्रमान स्वरती स्वरती से स्वरती स्वरती से स्वरती

सी, माम नक रा पूना हाणा बाह हवा में होता? विवास मादन रे बादका म पकरती कि बेरन ! महाराजा प्रवास करती कि बेरन ! महाराजा प्रवास में कि बेरन ! महाराजा प्रवास मारे हैं कि बेरन ! महाराजा प्रवास में रे कि बेरा ! महाराजा रे कि से रे कि हता के कि बेरा है कि बेर

42 / मोत्या मुघो औसर

रैडा सगठन नै पाछो जोड'र द्विढ नरै-- प्राण जाहि पर धचन ना जाहि। जिणा री मातावा हासरियो हुसराती हुवी सोख देवै'न-—

> इला न देणी आपणी, हालरियो हलराय। पत सिखावै पालणे. मरण बडाई माय ।

पग पाछा माडणासृती भरणो भलो। पातसा अववर की फीजा आडावळ मे धड्वे पण, माखरा स टकरा-टकरा'र पाछी बावड जावै।

भा बात की टेम री है जद पातसा अक्बर रो बेटो सलीम जुढ़ रा

नगाडा बजावतो हुयो हायी रै होदै पै आयो हो ।

मुद्री भर रजपुत कठ ताई झझता? शिणती कम होवण लागी, पण मुगला रै दाता विच्ये जीम ही।

चमचमाट करतो हुयो चेतक फिरकी री नाड पाछळ पगा प कम'र मृह पो फैर मुह घो, फैर मुह घो । अकलिंग रो कोप । ब्याह तरफ मुगला री फोजा घेरी न्हाज दियो । पिजरै में प्रसियोडी सिंध झपाटा मारै, दशाळ करें, मुझे, पण घेरी टूटण री आस को है नी । मुगल, दस मरता सो पचास नुवा और कभ जावता।

अंक झाला सिरदार अपणी तरवार मृतता हुयो रकाव री मदत स् जचक'र ओ तुमार देख्यो। अजेज घोडा रै ओड लगाई। पळक झटकतै 'राणा रै पाखती आ'र मुझण लागो। 'राणा रै प्राणा री कीमत बो आछी तरै

जार्ग ।

मेवाड री माटी रै सारू राणा री जरूरत है। झाला सिरदार तरवार रो वार दाल पै झेनतो हुयो हाय बढायो। भेवाड रो मुबट झाला रै मापै पळपळाट करतो हयो ओप्यो । राणा रो मुगट, झाला मन्ना रो मस्तक। राणा जी अचुम्मै स मुड'र झाला स पूछयो--- ' झाला मन्ना ओ काई?" सिरदार मुळक'र कैवै, 'बाखरी दम दो-च्यार पळ तो महाराणा बणवा दघो । आप अठा सु पद्यारो । खम्मा घणी । अन्तदाता । जद्ध आज ई ज नी निवर्डला मेवाड नै आपरी जरूरत है।"

'आला सिरदार !"

''खम्माध्यी । आप अजेज पद्यारी । मेवाड रो महाराणा हुकम देवै

है। जावो। ई चडी मुगट म्हारै मायै है।"

चेतन भूतभी ! तरबारा री शिणनार वै-वैनार नरें। महाराणा श्रेष्ट सताई। पायत चेतन, चीवक से पड़ा मिरणो बाल्या मु बदीठ हो गियो ! मुगत सिनाई, मुगट देख'र झाला शिरदार वे ई ज राणावी जाण'र जगा दे हुर पहिता। गरदनों छठमवों माणी !

"अस्ता-हो-अक्चर ।"--रो नारो मूज्यो, पण मगरियां यीन होत्यो

नी, टकरा'र पाछो बावड गियो ।

िन पाधरा आबे तो जिस्ट हुयोडो मत पाछी बायहै। राजाजी रो होडी माई सगतीहिय जो मुगलां मू जाय मिल्यो हो, श्री अप्युती होनेत्र रेग रंगी हो। प्रमाना अंतरिता यो री शुद्धि करेंगे। राजा में बिना युगट राजता हुया देगे' यो दब मियो। दो-तीन मुगल विचाई महाराजा मैं रेबाम लियो, अर पीछो वरें। यगतीछित रेग रजूती सून सरको पांर दौरण लागो। श्री आस्मा गँची सगती। पूर राजा री सगती है। मेवाह रोजन्म पारे पेट में पाने गिम्कारता। राजाजी मुगट बिहुणा गयी। टेम पूर्व मती ना।" अर नीजा थोडा रो असवार हवा सू बाता गरण लागो, "अंतरिता नाप" नेवाह री रिक्छा बरो। जी अस्थित हवा सू

माठो सायण री तानत चेतन मे अबै नी ही नी । पीर-पोर भायस, अन दान तो समा नदगी। सारी क्षेत्र बाता सू ताचिनयोदी, पण राणा री हुम्म-चेतन क्लाम समाई। नाठो पूरो साम नी सिनयो, अर पछाइ याँ पडियो। पूर्णो झाना सू नर नियो। चेतन री दसा देख'र राणा दावर रे उस् नदकी नाह पायमा नी भूमी।

इता में पवन-वेग मूं उडतो हुयां नीनो घोडो, उच ठोड पूगो। सगती-तिस दोड'र राणा जी रे पर्व साम्यो, "छिमा । छिमा दाता । हुनूम हुवे । मंबाह रो सगतीसिस, आगरो छोटो माई सगतीसिय मेवाह रे निछरा-वळ हावण ने तियार है।"

राणा यो नै छाती रै चेप'र प्रेम सू आस् टळकाता हुया माथै हाथ पैरी

44 / मोत्या मुघो औसर

अपणे हिरदै अर मन नै।

सगतीसिध पूछची "दाता रो मूबट ?" "मुगट ! मेबाड रो मुगट मेवाड रै माथ ? झाला सिरदार इण टैम

राणो है, बी रै हुकुम सू म्हे अकलिय री सेवा मे बायो ह ।"

अर बी टेम अक घोडो दौडतो हुयो आयो । असवार उतर'र मुजरो कर, "अन्तदाता, अ मुगट । झाला सिरदार सास तोडता हुया मन्ते हुकुम

दियों क' मह इण मुगट नै दाना नै सीप'र बरज करू के झालो मन्नोजी

सगतीसिंघ मुगट क्षेत्र'र राणा रै मार्थ पैरायो। धन्न है मन्ना । ओ मुगट तो नासवान है, पण सूरापण रा राजमुगट घारण करघोडा अेडा जोधा इतिहास रापाना में असर हो गिया। जलमभोम री आन-बान मरजादा पै अपणा प्राण निखराबळ करणाला झुझार रै सम्मान मे माथो मुकाओ ! इण देस री माटी सू तिलक करौ। चूम क्षी अपणै इतिहास रै केंड पाना नै। अर अर्ज समी है. टटोळलो अपणै आपने, अपणी भूजावा नै,

हसतो हयो मेबाड री माटी मे रिळमिळ गियो।"

सामै री खिडकी अर वा

पसीनां मुभीज्योडी दिन, पावण्डा पावण्डा हांपनी हुयी, समै रा पगोबिया चर्ड । मझ आसोज रै ताबहिया रो मद झरै--झरर-झरर...! नीरा--प्रिसीयत बर्दा री जेवानेव लाडक्वर । व्हारी पाग्रती हाथै हाम मानी बीरो घर । सामै-माम खुरयोडी खिउनी में बैटी है या । दोन्यू

री ग्रिडनिया रै विचाळै जेन सान डी-सी गळी आयोडी। ठण्डो सिमकारो न्हान'र वा यहबडाई, "ओह सिस्यू । व्हार बिना मैं विया जिज्ञली ? सिब्दू आसी । अवस आसी ।" भीरु बावळी सी यहबडाई ।

बा उठी । पर्श्व रो बटन दवायो, छत पै सटकतोई पर्श्व री ब्लेडा थेय-दो आडा खा'र दबगी । "आ जिक्छी भी लेडी गरमी मे गायब की जाये।" सुभलायोडी वा टेवन रै प्यारू-वानी अने घक्कर लगार पाछी आराम-

हुर्नी मे जा धसो । उण दो सिमकारो अ'र अै अणुता बोल म्हारी ध्यान खीच लियो । निजर उठा'र देख्यी तो उच किसोरी रै मूक्ट पै उदासी री माळम छायाशी ही। चे'रै री रगत उडघोडी। जाण म्हारी मा'णी री नुवी नायिका भैरप प्रगट हुद्यी । अणुतो उमावी हुयी ! मैं खुणी टेक'र हथेळिया पे टोडी झैल'र नीरा रो मनोविज्ञान पडवा लाग्यी।

नौकराणी पहदी हटा'र कमर में आई-- "बाईजी-सा, रोटी जीम सो ¹ जादा जिद आछी नी है ।" विफरियाडी नीरा बोनी, "आगी क्रेंक रोटी-बोटी नै । से जा अठा गु,

नो तो बाळी वारै कैंव दली।" नी पराभी च्यार मेर देख'र ममझावण र सुर मे बोली, ''बावू जो नै

मिठ्य 🔭 ्रः

दुनिया में नाळ को पहियो नी है, सिब्दू सू भी सवाया घणाई मिल जासी !" "यू जा अठै सू ! भाग !"

मीरा, इत्यार्द-बा^{*}रे बरसा र बेडे-नेडे। घरियो क्षेत्र। अंताक्षेत्र सतान। साठ-प्यार मे पिळ्योटी लाडकबर ! उम्रण-दूमणी वा उठी। तारती खिटकी सू वगीणी मे झाले। धायर नध्यव वी खिळकी री गैल गोई पेठवरों अपगी बाट-बोबती हुई 'कजळी' सू मिनमें वायतो हुनैसा। विडकी पै मुसाबी रेसम रो पढ़तो, पून ने बरना रैयो है—सहा रंपी है। सह दुर्परी

री तपती तू रो तपटा पड़ दें नै हटा र कमरे म ताक-साक करें! धन-धिन रे कळजुन बारी माया! माइत रे मावे काळम पोतिणया टावर अंदा पण हुई। बटा घरामा री नुकी सिक्यरती ने निमस्त्रार। माइत कर ताई पोरा देवें! अंडा टाबरा ने सीख दियोंडी ई अंडी जाई। बूडा-बकेरा रो बेलत है क ''ओमजनारा ने सीख देवणी कर वाती में भी होमणो।'

टणण् 'टणण् ''भीत पै डम्मोडी पुराणी वडी सूदी वर्जे राटकोरा टरणाया' पूर्म'र घडी ने पूरती वा वडवडाई—अरैदी वज गिया। अबै हाई वो नी आयो।"

भो नमरो नीरा पी भणाई-पढाई रो कमरो है। नीरा उमण-इमणी पीपिया पा पाना उळटे-पुळटे। काई दूढ़ ? अवस कोई कागदियो हूढ़ ती होवेसी। यावरोडी-सी कुसी री पीठ ए माणी सुला'र पसरपी। उळाम्योडा माळा मे दोग्यू हाचा री आगळिया उळाग'र आच्या सन्द कर लीवी—जाणै इसवैंचर री महाराणी पानलैंडड है उलराइली रो कब्जो होवण री चिता मे आपरे गहल में अंकली उदाख बैठभोडी हुईं।

पसीना सू नमापन दिन, पावण्डा-गावण्डा हाक्ती हुयो, समै रा पगो-पिया जर्द । मझ आसीन र तानडिया रो मद झर । झरर । झरर । प् सुसाड करती लू सू बाडा र पीचल र ठूठ पै बैठघोडो वागळो । वाय काव । करतो हुयो चड मियो ।

करतो हुयो चढ गियो ! भरम ¹'' नी ! भरम नी है । सागै-सागै मैं अबै हाल वी'रा बोल सुणिया है, ''कैंडा घुषराळा वाळ ⁹ इण पूरे स्थावर सहर ने उण जिसो केंक्

इण ती। वो मन्तै किसी प्यार करैं। वो म्हारै बिना नी रै सकै। अर मन्तै उण रै विना चैन नी पड़ै। पण वो आवैसा। अवस आसी।" अबै मन्ने इण म काई सक नी रैयो के नीरा, विरहिणी नामिका रो इज पार्ट कर रोग है।

बा उटी। होट्रे-होट प्राप्तिया माडवी हुनी खिडनी रैं नजीन पूपी। सलाट दें आयोडी ससीना री बूटा ने पूछी। एरफराता परदा ने डावी नानी निफ्तां कर फेट्टो कर दियो—सावधिया रोतान, नीरा रै मोरे गदरायें मुख्यें पक्षर उण ने और भी गुलाबी कर देये है। लूरा झपटा बी रै साठा म उठकार उण ने सावस खडाई।

तपती दोपारी, सामै री खिडकी अर वा । बावळी-सी बार मूल्डी

नाड'र बब्बोडी जुबान सूछानेसीन हेली मारियी—"सिब्बू 53 !" पड्लार म पून रो क्षपटी दो-तीन आम रा सूखा पता खिडनी में पेन पियो। वा पाछी मुडी। आराम नुर्मी में धसगी। "पापा तो सिब्बू नै नाम

र्षनी चावै। घर सूनाढ'र ६ चैन पडी। ओफ्फो ऽऽऽ।"

म्हारी धडकणा उताबळी हुयगी । सिब्बू ?

ंशो सिल्यू शायर है हुन ? ग्रहों में पेयर प्य रो छीरी मदिनयी, मिनिस रो अपरित्यों होंगे पनवायामें, सित्यों, श्रोमों, प्यूमी, सीवन मास्टर रो अलक्ष्यत्त राजू, पन श्री सिक्यू हुन ? इस पठी में सो भी नाव साद अजाप्यों। विन्य रो हो सर्वः श्री नाव । सायत कोडवर्ड हुनेला, निर्माण का व सायत गीरा अर सिल्यू रे हुन-त्रेम रो बाता जाण गिया होनेला—भी ने सर्वे आवग रो प्रुमारी करवा दी श्रेष्ट्रणा होने हिन के विन्यों करवा रो होनेला होने होने स्वार जाण गिया होनेला होने होने स्वार जाण गिया होनेला होने होने स्वार श्री निर्माण रो बात करे हुं। बावडों बीचानेर रै कियी स्वार होने गीरा रे सावचा देश तथा एक इस नळन्त ने कुण गूरी! अप्राप्ती स्वार से तियारी करें, अर साडवर्श बारिस सिल्युओं रे विषद है हूं। विवरित्यार रे ने से सी ने बुनाई नो सा गुप्ता रोवित्य रो रो से सी है व्यवस्था से स्वार से सिल्युओं रे विषद

कार रो पर्राटा। हान री थो ऽऽ क, थो ऽऽ क। नीरा मावचेत--डैडी

आग्या ।

अभेज उठी ! टेबल रै नजीव 'री बुर्सा पै जाय वैठी । विताय क्षोल ली । दराज सू पैन वाढ'र कापी स वाथ करणी सक्ष वियो । फाटव खुलण री वर्रे पू 55 । प्रसीपल सा'थ रे बूटा री खट-खट सन्नार्ट नै तोड रैया !

"नीह SS 1' — अन भारी पण लाडभरी आवाज ।— 'अंडी गरमी

48 / मोत्या मुघो औसर में काई पढ़ैं। थोडीक सोजा विटिया।"

नीरा रो पड्तर--गणित रा सवाल कर रैयी हू पापा।" "नो । नाऊ स्लिप ऑन ।"

"यस, इंडी ।"

नीरा उठी। विताब बन्द करी। पैन रो दक्कण सगायी। आडो जीर

मुबन्द कर दियो अर सौफे पै जाय पसरगी। खट : खट : जुता री आवाज दबगी । अंक दो मिनट आख्या मूर्द

पड़ी री। पण वाछी उठी! वा खिडकी रै पाख्ती जा'र कमगी! ई जमाने ने काई हो गियो है। अखबारा रै हरेक पाना पै प्रेम,

बलात्कार, अपहरण । कदैई सुरेस-सुममा काण्ड री धुम तो कदैई वर्परी ठाकर और प्रेमलता तो ओम प्रकाश-उर्मिला-भाग्ड। अर आ नीरा ! इग्यारी-

बारै बरसा री अवन-ववारी--अर शै लखण । नीरा री कसके। चेंदा रा उतार-चढाव, ऊण्डा निस्वारा, आळस री मरोड देव'र में पैन उठायी। बी श हालचाल पाना पै उतारण लागी।

अगीरा बरसावतो सूरज । सामै री खिडकी अर वा लारली खिडकी स् माक्ती हयी। कदेई कुरमी पै जा बैठे, क्देई पया रो स्थीच घटखटार्व, पण पद्मों हो अगदजी रैं पम रै ज्यू न हिले, न इली ! जनमणी होय पाछी

आराम-कुरसी पै पसरगी । आधी सूती, आधी जारी ! वगीची म कोई गडक भुस्यी। नीरा मावचेत होय'र अजेज उठी। सायत वो आयो हुवैला जिकण नै देख'र गडक भूम्यो । झपट'र खिडकी रै

नजीन प्रात्ता आदया में जापी आसावा रा नवलख तारा झिलमिलाकण सागा ! खादी रा होळा-हम्प कुरता रै जैही होळो-हम्प बादळिया आभी में

लारै । वगीची रै म्खडा रा सुखा पाना चरमरामा सायत किणी रै पगा सू दब'र । कीरा लुळ'र झाकै। चाणचक उष्टळती हुई बोली---"आयग्यो ।"

म्हारी धडकणा हिरदै मे नी मार्व । अन्तर मोयोडो देख् ! धडकणा

तिरम्या-हिरणा रै ज्यु दौड रैयी है। वर्दई सुरज रै आगै, क्दैयी मुरज रै

मुण्डै में आंगळिया चाल'र जैन होळैसीक सीटी बजाई। हेलो मारियो

"मिट्यू ८६ । उठीनै हो'र बा ऽ जा ८६ ।



व्खार भात-भात रा भासोज रो तावडी । हिरण्या रा रग ई काळा घ्रें पड जार्व पर्छ मिनखा

रो तो पूछणौ ई काई। मज्झ दुवैर री बेळा। टैसण मार्थ तावहै में जभी रेलगाडी ई हाफै ही। लिलाड रो पसीनो पूछ'र म्हें सीट मार्थ बैठो के इजण सीटी देम दी। या दौडती यनी डिव्नें म चढी अर न्हार नन आयन बैठगी।

सांबळी रग, दोवडी हाइ अर उपणती जोवन । आस्या गुडहळ रै फूल उप स्वी-स्वी। मदछवियै जीवन री सीसी आच मैसे-सीणै गामा स् छण-

छण'र आखती-पाखती पून मे मुरसुरी फैनाय री। भी चावता धका है म्हारी निजर बी रै चेहरे में बार-बार अटक जावै। आख्या री पलका भीगी-भीगी-सी लागे । अवस बोडी जेज पैली रोई हसी । इसी लखावे जाण है रै मैननियी हियह म जनालामुखी दब्योही, जिको अबै उफण मै ಜನೆ ಇರುಗೆ 1

म्है धर्मयुग खोल'र पाना पळटबा साम्यो ।: सामसी बैच माथै बैठपी अन आधमड आदमी बीनै आख्या फाड-पाड'र देख रैयो, जिल स बा थवरायोडी-सी लाग । गाडी हिचको देय'र छुक-छुक वरती व्हीर हुई । श्री आपरी भैली नै गोडे हैठे दबाई अंकर बठी-उठी निजर फेरी अर पर्छ टेलि-फोन रै बीडते याभा नै बारी में सुदखण लागगी। पून बी रै रूखे उळझ-

घोड़ केसा नै फर-फर करतो उडावण साम्यो। ऊपरली बर्य माथै वधमूतौ जेन मोटधार बैठघो हयग्यो अर तम्बाख् री डाबी मू तम्बाखू काढ'र चुनो मिलावण लाम्यौ । हवाळी मे अगूठै स् मसळतो यनो सामलै मुसाफर नै कैवण लाग्यौ "बरे काका, पुतली वाई ते राष्ट्र कुण बणाई 'आपा ! " उण समाब दे अत्याव सू वाठी तम आपर्वे सदृष्ठ उद्याई । सुपाया ने आपा पत्र यो जूती समझा । अध्यवारा में नित- रोज सामें में में में कहा ने मोर पर्वे प्रति कार्यों है अवार परमू 'ऐं बात क्षेत्र परमा प्रों है अवार परमू 'ऐं बात क्षेत्र परमापोड़ी जवान छोरी—अवमेर कर्ने आनासागर में हुन्द 'र मप्पी । पण मर्सी-मर्सी सामरे री समझे पोल खोनमी वो रो बाप सामें में सहुउर भी देव सम्बो, सो बापड़ों ने नाठी तम क्यों जब ''।''
आपरी बात 'रो प्रधान जाणवा साम तमाबू दे सामी देवता जर्ण

ष्याह मेर निजर फेरी अर निजले होठ में तमाजू वाया र मीट छोरी री चोड़ी में गड़ाय दी। निजर री अणिया चुमता है छोरी साढ़ी रै पत्ले मैं चौड़ों में खोस सियों अर निमासा नाय र बार तपता खेजहना अर हाफना रेत रा टीवा मैं देवण लागी। सामी आधक हिमल है कैने आधी सीट मार्य पन मोट र अने होक रो मूनी ही। मैं आपसरी में बसळ कर हा जिन सू जान पढ़ी के छोजरी स्कृत म चपरासी रहपोड़ी। अर्ज रिटामर हुवन्यों। चर में मार्ट आयोड़ी जोध-जनम सेटी बैटी, जिजरा पीछड़ हाम करावना पण जमा रूम अर लेजुकटी मिसी मोनी। वने बैटणो आधक हिमल का ये पच्यात संसरव की पर रे चया री पच्यात संसरव की पर रे चया से साम हिसार करान की स्वर्ण स्वर्ण से साम सेटी बैटी

मैं सीट रै रगड'र बुझाय दो अर चपरासी ने नैवण साग्यौ—''रामा वा, जिण हवाई जहाज री बम्बई सू अपहरण हवा, बीं से म्हारो साळी ई दिसावर जावें हो। अपहरणनर्दा मुसीवनसिंघ नै अमृतसर ये गोली सु उडाप

दियों।"
सभी वा सरमन री बात गुनने नोल्यो—' पन के कनकिया मुसीवत-सिप ती देन भर में और-औड भरपा पटापा। हरेन सप्तारी देखर होता ! देख तो, बाना पाटपा बैठपा, बा नै मोळी सु उत्तवांपयों कर पैटा होता।" यो निसासा नावतों वार्ष कैनण लायो—म्हारी बेटी अप्पत्ती अठार वरमा री हुमगी, राज सु पट्डा पिने सो भीरा हाय पीडाट पर्या,। पण हरक इसी मार्थ मुसीवतांग्य देळी, बतानों निया नाम वर्ष ?

म्हनै बात मे रस सेवती देखें र वी वैवण साम्यी—"बादू साब, म्हनै पैसन री नारवाई वरते नै वरस हुषम्यर। छानी मायै बोध जवान वेटी वैठी। नीचै उत्तरको । गराच अर रामी बाहमन साम्या । उत्तरमी बर्च वै बेन्द्रोहा दो आग ग दोक्स उत्तार नै बा कुटो मै हैनो दियो । हिम्बे री ज्ञारती अर नीचली स्वाम ई वर्षा थानी हुवली । स्टू अर पतामी दीव्यू ई रैपावा । आगती सैचा वे थेठी दशका थीर री जाता सुवाही आवनी सुगलमान ल्याया पानदान कीत'र नरोता न खटार-घटार करती मुतारी काट री ही ।

मैं पाय रा दो निकोश निवा । वतामी ना-न बरती चाय मेद सी । 'बर्ड उत्तरको है बर्त ? "

"मोजन रे देमण ।"

बी उड़ने बैंगां री तटी ने मुद्दे मुहदावना आपरी धेली में गायळ मीचे दबाई, अर क्लान री ट्री कीन में मैंग्डी विन मु ठीक करने मीचे नाम दियो।

इतार में भूषारी बाटनी अंब न्यायी अचाणवर उद्यो। सद्विया बिनर दिया अर जोर-जोर म मायी हिलाय'र धैनण लागी। भी रे पयन चढायी हो-"है मीरा दातार, मुझरी माप बर दे। मैं उसरी खा जाऊगी। मेरे को अजमा का लाइ नी खिलाया।"

पनामी हर'र महारे नंही सरक्गी। यो री मुडी पीछी पहायी अर

लिताइ पै पसीनै री युदा घमनण लागी ।

में बीने पातन बधायता नहघी-"करी मत, ई रै तो नोई लफरी **∄** j" पतासी होटो पे जीभ फैर ने यहवडाई-- 'म्हारी सागु नै ई इण रै व्यु कुण जाणी कोई वितर आवे। वा पवन प्रद्रमा शेल'र केंद्रै में पतासी

आपर पीहर मू अंक सोळी सोनी नै आपरी नणद--- मूकडी नै देवें सी पनामी रै पेट मह जावें भी तो उनर भर बाधडी रैय जासी.. । म्हारै मायता री इतरी हैसियत नीनी वै इल मुघीबाढे मैं वै तोळी भर सोनी देवें । इण भात देवना रै दूसण रै नाव सु म्हारी जीवणी हराम होयग्यी है ।

म्हारी धणी ड्राईवर है। वो दारू पीर्व अर रोज म्हने बुटै--"लाव राड बाहाडी सीनो !! अर्ब म्ह सोनी कड़ै मुलाबू ?…बा छिबरा-छिबरा रोवण लागगी, आख्या सु टळक-टळक आंसुडा बैंवण साम्या ।

"रो मत गैली बैन ! दुख-मुख रा तो जोडा है। जिंदगाणी में छिया तावडी चालती रैंवे। अर्वे दूख है तो पर्छ सुख ई आसी। धीरन राख। यारी पीडर कठे है ?

"पीहर? कठै तौ पीहर नै कठै सासरी। अबै सब ठीव है। अठै सोवत रै नोई स्कूल में चपडासण री जर्ग खाली मुणी है। नीवरी कर नै

पेट मराई कर सक तो भगवान री मैरबानी।"

म्हार सरीर में बखार री हरारत बढण सागी ही। आख्या घुळण लागी अर हाउका दुखण मान्या। मार्थ री नसा खटान्-पटान नरण लागी।

"पतासी देख तो म्हारी सरोर वनै गरम लागै ?" गरम नाई छामी गरम है। आख्या ई राती चुट होयरी। यानै तौ बुखार आयम्पी धीमै। पै सुय जावी बीराजी। वा म्हारी पकडचोडी पुणवी छोडती बोली अर अर कानी सिरकगी। म्ह आस्याकारी टावर री गळाई झट पग लम्बा परमे सयस्यौ ।

म्हारी आख्या मार्च अण्ती भार हो। बुखार री अयोग में म्हारी आरया मीचीजण लागी। वी आपरी हथाळी म्हारी सिखाइ पे धरी। स्त्री लखायो जाण घर री प्रोळ मे पाटे माथै सुतौ हू। जीजी पन येटी स्थारी माथी दवाय री है। वी रै ह्याळी री सीतळता म्हार तन-मन में बस री है। 'कद दें आख उपहे, कदे ई वद हय जावे।

रेल चाल री है छुन छुक छुन ... छुन, टेलेफोन रा बाधा बोहता-हाफता नार्र छुटता जाने । दूर आभै में लेन नपासी बादळी झार-झार'र हिन्दी में देख आवें। नीद में न जाणे नितरा टैनण सार्द छुटाया, मुसापर चत्रता-उत्तरता रेवा।

क्षेत्र मैली म्हार मुदा पे आय'र पडमी अर म्हारी तदा ट्टी । डिब्बी समयम नाठी मरीजम्यो हो । हाना-दरवट इती व हाना पटी बात नी सणीजै। मैं हडवडायंर उठायौ। पतामी आपरी जनै मार्थ नी ही। बारे भाक'र टेसण री नाव बाच्ची ती ठा पडी के मोबन सार रैयग्यी।

म्हारी निजर हाय रै पुनर्व पै पडी तो अव्यक्षे में पहरयी। पुनर्व प माडी री लीरी बध्योडी ही राखी री हाई।

56 / मोस्या मूपो औसर

देखण सागी।

म्हारी बुखार उत्तरम्यी है।

"भाई साब, घोडी जगह देना।" जेर अपटुडेट लडवी बैटल नै जगै माग री ही । गहें बारी वानी सिरव'र बीने बैठण ने जर्न देय दी ।

में बारी रै माथी टिवाय'र आख्या मीच ली।

म्हारी बुखार हळको तो पडम्बौ हो, पण खुमारी हाल उतरी नी हो।

इजण सीटी दीवी अर रेल होळे-होळे सिरवण सामी। थीडीव जेज म बा जाणे धम्म-धम्म बरती निरत बरण लाभी, थोडीव ताल में बा छोरी होरा लेवण लागी अर माबी म्हार खाई पै टिकाय दिया । महन बी री बेसरमी आछी नी लागी। मैं धक्की देवता क्यी-"सीधी बैठ बाई। यु मार्थ भाई पड़ै ?" वा समळ र बैठनी पण रीस भरी निजरा मुस्तर्न

पण म्हनै य लखायी जाण म्हारी मरीर खासी हळ की होयखो है अर

